केशो ज्ञानी की कुंडलियां

‡ãŠÍãã –ãã¶ãã ‡ãŠ ¾ãã œ¡ª Ö½ãã ¶ã Ìã Ìã ÌãÓãã¾¼ã ÌããÀÓŸ ¹ã¨ã‡‡ãŠãÀ ºãã ‡ãŠÓ¥ã ‡ãŠ Ôãã•ã¶¾ã Ôã ã½ãÊã Ö •ãã ƒ¶ã‡ãŠ ã¹ã¦ãã ¶ã Ôã¼ãã Êã ‡ãŠÀ ÀŒã ©ãý ‡ãŠÍãã „¸ãã Ôã ª ã Ìã Ôã¼ãã Ìã¦ã: ¶ãÀ¹ãÀ ‡ãŠ ÀÖ¶ã ÌããÊã ©ãý ƒ¶ã‡ãŠ ºãã À¼ã Ö½ã , ãã À •ãã¶ã‡ãŠãÀã ¹ãã¶ã ‡ãŠã „¸Ôã‡ãŠ Öý ã Ìã´ã¶ãã , ãã À Íãã£ãã©ã¾ã Ôã ã¶ã Ìã ª¶ã Ö ã‡ãŠ ‡ãŠÍãã –ãã¶ãã ‡ãŠ •ãã Ìã¶ã , ãã À ÀÞã¶ãã ÔãÔãã À ‡ãŠ ºãã À¼ã , ãã À •ãã¶ã‡ãŠãÀã †‡ãŠ¨ã ‡ãŠÀ¶ã ¼ã ½ã ªª ‡ãŠÀý „ÊÊã Œã¶ãã¾ã Ö ã‡ãŠ ½ãÊã¦ã: ÀÊÖ, ‡ãŠãØã ¡ã ‡ãŠ ºãã ‡ãŠÓ¥ã ãÔª Ô¦ãã¶ã >ãƒ½Ôã , ãã À >ãƒ½Ôã , ãã ¹ãŠ ƒã ¡ ¾ãã Ôã •ã ¡ ÀÖ Öý ÔãÀª ã À ¹ã>ÊÃã ¹ã À , ãã ¹ã‡ãŠã ª ã ¹ãÔ¦ã‡ãŠ ¹ã‡ãŠãã Íã¦ã Ö , ãã À , ã º ã , ãã ¹ã Ôã¦ã¨ã¦ãã Ôã¶ãã¶¾ãã ¹ãA ‡ãŠã½ã ‡ãŠÀ ÀÖ Öý

(1) अख मट्टका लाए के लिया स्वाल निकाल
कब तक ऐसा करोगे बेटा वक्त सम्भाल
बेटा वक्त सम्भाल अपनी हिम्मत चाहिए
इम्तहां जब हो सब से अव्वल रहिये
केशव ज्ञानी कहे स्वाल सुन करो झट्टका
हरफ चुराना बुरा छोड़ दे आंख मट्टका

(2) छीका टूटा यत्न से और बिल्ले हुए सफेद
मन भर दूध रूड़ाया एक छटाकी हेत
एक छटांकी हेत हाये खुदगरजी खोटी
फाड़ पराई पाग अपनी करे लंगोटी
केशव ज्ञानी कहे माल औरों का लूटा
अपना कारज सिद्ध यत्न कर छींका टूटा

(3) नारी मूर्ख नर चतुर, चतुर नार नर मूढ़
जहां होत संयोग यह होत एक को सूढ
होत एक को सूढ़ मूढ़ से बनो संजोगा
मूर्ख अपनी करें चतुर को भारी रोगा
केशव ज्ञानी कहे बुद्ध चतुरों की हारी
एक दु:खी वहां होत मूढ़ जहां नर या नारी

(4) चतुराई चूल्हे पड़ी मूर्ख से कर संग
समझाया समझे नहीं सदा रहत है जंग
सदा रहत है जंग करे कोई क्या बुद्धिमानी
पाथर गलता नहीं रहे बरसों विच पानी
केशव ज्ञानी कहे चतुर हो जाए सोदाई
मूर्ख अपनी करे पड़ी चूल्हे चतुराई

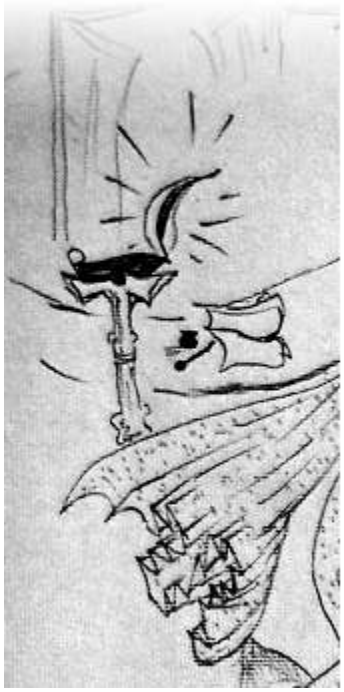

(5) दोनों भगनी मानिये चिन्ता चिता लुकाई
चिंता पर बिन्दी लगी तासे तिसे बढ़ाई
तासे तिसे बढ़ाई चिता राखे नहीं बिन्दा
उससे मुरदा जले जलाए चिन्ता जिंदा
केशव जानी कहे बुरी अन्तर की अग्नि
हृदय दग्ध कर दे मालिये दोनों भगनी

(6) पहले तोलों बात को पीछे करो कलाम
एक बात सुख दात है एक करे बदनाम
एक करे बदनाम चाम को एक उखाड़े
एक तुडावे दांत एक हाथी पर चाड़े
केशव ज्ञानी कहे जब तुम मुख से बोलो
पछताना नहीं पड़े बात को पहले तोलों

(7) बीजा अपना कांटिये नाम यही को भाग
छत्ती व्यंजन किसी को मिले किसी को साग
मिले किसी को साग कोई चढ़ चले भुजंगी
केशव ज्ञानी कहे यार मन धीर धरे जा
दोष न दीजे काहू काटिये अपना वीजा
कोई उठावे भार कोई भागे पग नंगी

(8) नारी बस हो प्रीत से और अंकुश से गज मस्त
नाकेल पड़े से ऊंठ हो और शेर पिंजरे पस्त
शेर पिंजरे पस्त हस्त लाठी से खोता
बैल नाथ के साथ बाघ से घोड़ा होता
केशव ज्ञानी कहे नार जो आज्ञाकारी
पति को वश कर लेत प्रीत से वश हो नारी

(9) ऐसा पुरुष न चाहिए ज्यूं अनार का फूल
देखन को कुछ रंग है सूंघे गन्ध न मूल
सूंघे गन्ध न मूल यही सिम्बल का लेखा
बिना गन्ध के फूल स्वाद बिन फल यह देखा
केशव ज्ञानी कहे निपट ज्यूं खोटा पैसा
कठपुतली की तरह पुरुष नहीं चाहिए ऐसा